श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ अंतर्गत

समाधितंत्र अध्ययन वर्ष

सौजन्य : मातुश्री ललिताबेन व्रजलाल शाह परिवार, जलगांव

प्रश्नपत्र क्रमांक - ५ (कुल मार्कस–५०)

अभ्यासक्रम : **समाधितंत्र : गाथा ५६ से ६५**

परीक्षार्थीका नाम: ..... उम्र वर्ष : .....

मंडलका नाम : ..... गाँवका नाम : .....

फोन नंबर : ..... ता. १-०८-२०१९

सूचना : (१) प्रश्नोंके उत्तर समाधितंत्रके आधार पर देने होंगे।

प्रश्न–१ : नीचे दिये गये प्रश्नोंके एक ही शब्दमें उत्तर दिजीये। १०

(१) शरीर, शुभाशुभ रागादि भावकर्म और ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्म आत्मासे पृथक् है, इसलिये वे कैसे है ? .....

(२) आत्मस्वरूपमें स्थित होकर स्वयंके शरीरको अनात्मबुद्धिसे किसने अनुभव किया ? .....

(३) कैसे जीव बहिर्मुख होते है कि जिनकी दृष्टि बाह्य विषयों पर ही होती है एवं आत्मस्वरूप जाननेकी जिज्ञासा अथवा रुचि नहीं होती है। .....

(४) आत्मस्वरूप कैसा होनेके कारण वह शब्द द्वारा अथवा विकल्प द्वारा दूसरोंको नहीं समझाया जा सकता। .....

(५) जब तक शरीर, वचन और मन ये तीनोंको जीव आत्मबुद्धिसे ग्रहण करे तब तक क्या है ? .....

प्रश्न–२ : कौंसमें दिये गये विकल्पमेंसे सही विकल्पके आगे ✓ निशानी करें। १०

(१) मन, वचन, कायकी प्रवृत्ति यह संसारका कारण नहीं, लेकिन उसमें आत्मबुद्धि करना वह किसका कारण है ? (नरक, संसार)

(२) जैसे मोटा वस्त्र पहननेसे, बुद्धिमान मनुष्य स्वयंको मोटा नहीं मानता, वैसे शरीर मोटा होते आत्मा मोटा नहीं होता ऐसा कौन मानता नहीं है ? (अंतरात्मा, विवेकीजन)

(३) स्वस्वरूपमें स्थिर होकर जबतक क्या नहीं करनेसे शरीरादि परपदार्थोंके साथ कर्ताबुद्धि हुए बिना नहीं रहेगी ? (भेदज्ञान, ज्ञान)

(४) अस्थिरताके कारण अन्यको समझानेका विकल्प आये, लेकिन अभिप्रायमें उसका क्या है ? (विरोध, निषेध)

(५) शरीराश्रित उपवास करना, पंचाग्नि तप करना, मौन रखना, ताटक करना, अनेक योग-आसन करना आदि जडक्रियाओंका सम्बन्ध किसके साथ है ? (आत्मा, शरीर)

प्रश्न–३ : नीचे दिये गये प्रश्नोंके उत्तर 'हा' अथवा 'नहीं'में दिजीये। १०

(१) चैतन्यस्वरूप स्वसंवेदनगम्य है, वाणी अथवा विकल्प द्वारा वह दूसरोंको समझाया जा सके ऐसा नहीं है। .....

(२) शरीर सम्बन्धी निग्रह-अनुग्रहबुद्धि करना वह ज्ञान है। .....

(३) मन, वचन, कायकी प्रवृत्ति वह संसारका कारण नहीं, क्योंकि वह जडकी क्रिया है। .....

(४) बहिरात्मपना त्यागकर आत्मस्वरूपमें स्थिर होना वह ही सुखका उपाय है। .....

(५) पर-उपदेशकी प्रवृत्तिका विकल्प वह अशुभ राग है। .....

प्रश्न : ४ नीचे दिये गये प्रश्नोंके उत्तर शोर्टमें दिजीये । **१०**

(१) मूढात्माको आत्मस्वरूपका बोध देना व्यर्थ किसलिये है ?

(२) प्रबुद्धात्मा अर्थात् क्या ?

(३) ज्ञानी स्वयंके आत्माकी पुष्टि किससे मानता है ?

(४) शरीर स्वस्थ हो तभी धर्म होता है, जिर्ण अथवा रोगग्रस्त शरीरसे धर्म नहीं होता यह किसका भ्रम है ?

(५) कर्ता-भोक्ताबुद्धि कब होती है ?

प्रश्न : ४ नीचे दिये गये कोई भी एक विषय पर निबंध लिखें । **१०**

(१) बहिरात्माको आत्मस्वरूपका बोध ज्ञानी क्यों कराते नहीं उसके कारण बतलाओ ।

(२) मिथ्यात्वके संस्कारवश बहिरात्माकी दशा कैसी होती है वह बतलाओ ।

(३) अंतरात्माकी शरीर सम्बन्धी मान्यता क्या है वह बतलाओ ।

नोंध : कृपया प्रश्नपत्र–५ के उत्तरपत्र ता. ३०-९-२०१९ तक सोनगढ़ पहुँचे इस प्रकारसे भेजे ।